उपखंड-IV: 1815 के बाद का यूरोप

■ प्रमुख मुद्देः

- इस टॉपिक में फ्रांस की क्रान्ति के पश्चात् राजनीतिक परिदृश्य का ज्ञान प्राप्त होगा। इसका अध्ययन कर हम जान सकेंगे कि किस प्रकार 19वीं सदी का यूरोप फ्रांस की क्रांति की विरासत से संघर्ष करता रहा था। इस टॉपिक में निम्नलिखित शामिल होंगे-

1. पीछे नेपोलियन ने क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में यूरोप में प्रचलित व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया था। अत: नेपोलियन की पराजय के पश्चात् फिर एक बार यूरोप में परम्परावादी शक्तियाँ सक्रिय हो गयीं और उन्होंने एक यूरोपीय कांग्रेस (वियना कांग्रेस) के माध्यम से पुरानी व्यवस्था को बहाल करने का प्रयास किया।
2. किन्तु फ्रांस की क्रान्ति से निकली हुई दो विचारधाराएँ- उदारवाद एवं राष्ट्रवाद ने यूरोपीय व्यवस्था को सशक्त चुनौती दी। अत: सम्पूर्ण 19वीं सदी तक यूरोप में पुरानी व्यवस्था तथा नवीन विचारों के बीच संघर्ष चलता रहा तथा इसी क्रम में 19वीं सदी में अनेक यूरोपीय क्रान्तियाँ घटित हुईं, जिनके माध्यम से परिवर्तन होता रहा।
3. 19वीं सदी के यूरोप में उदारवाद की तुलना में राष्ट्रवाद जैसी विचारधारा कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध हुई तथा इसके प्रभाव में निम्नलिखित परिवर्तन देखे गये-

- राष्ट्रवाद ने एक मजबूत सीमेंट का काम करते हुये पश्चिमी यूरोपीय देशों को पहले की तुलना में अधिक संगठित कर दिया।
- राष्ट्रवादी विचारधारा ने 19वीं सदी में विभाजित इटालियन और जर्मन क्षेत्रों को आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित कर दिया।
- परन्तु, उसी राष्ट्रवाद ने ऑटोमन साम्राज्य, रूसी साम्राज्य एवं हैब्सबर्ग साम्राज्य में भिन्न भाषायी तथा नस्लीय समूहों के बीच राष्ट्रवादी आकांक्षा जगाकर विघटन को प्रोत्साहन दे दिया।
- फिर आगे राष्ट्रवाद ने उग्रराष्ट्रवाद का रूप ले लिया। एकीकृत जर्मनी ने यूरोप में शक्ति संतुलन को चुनौती दे डाली और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन ने बाल्कन समस्या को जन्म दे दिया। इन सबके परिणामस्वरूप यूरोप प्रथम विश्वयुद्ध की कगार पर आ गया।

1815 के पश्चात्
↓
वियना कांग्रेस, 1815
↓
उद्देश्य
(परिवर्तन को रोकना)

↓	↓	↓
यूरोप के मानचित्र को पुनर्बहाल करना	फ्रांस की क्रांति से उत्पन्न विचारधारा (उदारवाद एवं राष्ट्रवाद) को दबाना।	यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखना
↓	■ इटली को 7 भागों में तथा जर्मनी को 39 भागों में विभाजित करना, ताकि ये भविष्य में राष्ट्र नहीं बन सके।	↓
आधार क्या हो? ■ वंश परम्परा ■ यथास्थितिवाद		राजा की शक्ति पर आधारित राष्ट्रीय राज्य को पुनर्स्थापित करने का प्रयास

■ वियना कांग्रेसः

- नेपोलियन की पराजय के पश्चात्, विजेता देशों में 4 प्रमुख देश उभरकर आये, ये थे ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया, रूस और प्रशा। इनके द्वारा एक यूरोपीय कांग्रेस का आयोजन ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में किया गया। अत: इसे वियना कांग्रेस के नाम से जाना गया। इसमें प्रमुख भूमिका आस्ट्रिया के चांसलर प्रिंस मेटरनिख ने निभायी। वियना कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य था यूरोप में परिवर्तन को रोकना तथा यूरोपीय व्यवस्था को क्रांति पूर्व स्थिति में लाना। इसके लिए वियना कांग्रेस के द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रमों को अपनाया गया-

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

मानचित्र- 1815 का यूरोप

1. **यूरोप के मानचित्र का पुनर्निर्धारण**- नेपोलियन की विजय ने यूरोप की राष्ट्रीय सीमा को बदल दिया था। अत: वियना कांग्रेस का एक उद्देश्य यूरोप के मानचित्र का पुनर्निर्धारण करना था। इसके लिए उसने निम्नलिखित सिद्धान्तों पर बल दिया-
   - **वैध वंश परम्परा पर बल** अर्थात् जिस क्षेत्र में जिस वंश का शासन रहा हो, उस क्षेत्र में उसी वंश के शासन को कायम करना, ताकि परिवर्तन को रोका जा सके।
   - **यथास्थितिवाद अर्थात् परिवर्तन को रोकना**- वियना कांग्रेस का प्रयास जनता की आकांक्षाओं को दबाते हुये पुरानी व्यवस्था अर्थात् राजतंत्र, कुलीन वर्ग और चर्च को पुनर्स्थापित करना था।
2. **फ्रांस की क्रान्ति से उत्पन्न रेडिकल विचारधाराओं- उदारवाद और राष्ट्रवाद को दबाना**- इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इटली एवं जर्मनी को एक सोची-समझी नीति के तहत विभाजित कर दिया गया, जिसे पहले नेपोलियन ने पुनर्गठित कर दिया था-

- जर्मन क्षेत्र को नेपोलियन ने पुनर्संगठित करके 200 छोटे-छोटे राज्यों से 16 राज्यों में बाँटा था, किन्तु वियना कांग्रेस ने उनका पुनर्विभाजन करते हुये उन्हें 39 राज्यों में बाँट दिया। इनमें शक्तिशाली राज्य प्रशा था जो एक यूरोपीय शक्ति भी था तथा फिर उससे पृथक 38 छोटे-छोटे राज्य थे। फिर इनके प्रतिनिधित्व के लिए जर्मनी में फ्रैंकफर्ट नामक स्थान पर एक पार्लियामेंट की स्थापना की गयी। साथ ही, ऑस्ट्रिया को उनके संरक्षक के रूप में स्थापित कर दिया गया, ताकि परिवर्तन को रोका जा सके।

- इटालियन क्षेत्रों को 7 भागों में बाँट दिया गया। पीडमॉण्ट एवं सार्डीनिया को शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया गया। लोम्बार्डी एवं वेनेशिया को पृथक् कर ऑस्ट्रिया के अधीन किया गया तथा परमा, मोडेना एवं टस्कनी को हैब्सबर्ग वंश के अधीन कर दिया गया। वहीं नेपुल्स एवं सिसली में बूर्बो वंश के शासक को स्थापित किया गया तथा मध्यवर्ती क्षेत्र में पोप का राज्य स्थापित किया गया। इस प्रकार, वियना कांग्रेस ने इटली को इस प्रकार विभाजित कर दिया कि मेटरनिख के शब्दों में वह महज 'भौगोलिक अभिव्यक्ति' बनकर रह गया।

3. **यूरोप में शक्ति संतुलन को पुनर्स्थापित करना**-

मानचित्र- वियना कांग्रेस के पश्चात् यूरोप

जैसा कि हम देखते हैं कि फ्रांस की क्रान्ति ने वेस्टफेलिया व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया था। इस व्यवस्था ने राष्ट्र की निश्चित भौगोलिक सीमा पर बल दिया था और 'राजा के

राष्ट्र' की अवधारणा को स्थापित किया था। परन्तु फ्रांस की क्रान्ति की अपील भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर रही थी तथा जनसंप्रभुता की अवधारणा ने राजा के राष्ट्र को जनता के राष्ट्र के रूप में परिवर्तित कर दिया था। अतः वियना कांग्रेस वेस्टफेलिया पद्धति को पुनः बहाल करना चाहती थी, साथ ही वह शक्ति संतुलन को भी पुनर्स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध थी। शक्ति संतुलन को पुनर्स्थापित करने के क्रम में वियना कांग्रेस के द्वारा निम्नलिखित कदम उठाये गये-

- भविष्य में फ्रांस यूरोपीय शक्ति संतुलन के लिए खतरा न बन सके, इसके लिए उसके पड़ोसी देशों को शक्तिशाली बनाने का लक्ष्य रखा गया। इस क्रम में नॉर्वे को स्वीडन से जोड़ दिया गया।
- फ्रांस के उत्तर-पूरब में हॉलैण्ड और बेल्जियम को जोड़कर नीदरलैण्ड का गठन किया गया।
- प्रशा को शक्तिशाली बनाने का दोहरा उद्देश्य था। प्रथम, वह फ्रांस की शक्ति को संतुलित कर सके और दूसरे, वह रूस की शक्ति को भी संतुलित कर सके। इसलिए प्रशा को सैक्सनी क्षेत्र का एक भाग और फ्रांस के पड़ोस में राइनलैण्ड का एक भाग दिया गया।
- इटली में 'हाउस ऑफ सेवॉय' पहले केवल पीडमॉण्ट पर शासन करता था, परन्तु अब उसे सार्डीनिया एवं जेनेवा का भू-भाग दिया गया।

■ वियना कांग्रेस के द्वारा स्थापित निरंतरता की शक्तिः

- वियना कांग्रेस का प्रयास था निरन्तरता की शक्ति को मजबूत बनाना। निरन्तरता की शक्ति थी राजतंत्र, कुलीन वर्ग एवं चर्च। जैसा कि हमने पीछे देखा कि फ्रांस की क्रांति एवं यूरोप में फ्रांस के विस्तार के कारण ये संस्थायें काफी क्षतिग्रस्त हो गयी थीं। अतः ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख के नेतृत्व में वियना कांग्रेस पुरानी व्यवस्था को बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध थी। इसके लिए मेटरनिख ने एक व्यवस्था कायम की, जिसे **'मेटरनिख पद्धति'** का नाम दिया जाता है। मेटरनिख पद्धति के निम्नलिखित पहलू थे-

1. उसके अनुसार, क्रान्ति आर्थिक-सामाजिक कारणों से घटित नहीं होती, बल्कि गुप्त संगठन के कारण घटित होती है। अतः अगर षड्यंत्रों पर काबू पा लिया जाए, तो क्रान्ति को रोका जा सकता है।
2. क्रान्तिकारी विचारों को दबाने के लिए यूरोपीय राष्ट्रों को एक संगठन के रूप में बंधकर काम करना चाहिए। इसी क्रम में **'कन्सर्ट ऑफ यूरोप'** का गठन किया गया था। इसमें ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया, रूस, प्रशा तथा फ्रांस पाँच देश शामिल थे।
3. उसके अनुसार, विदेश नीति, घरेलू नीति की ही विस्तार होती है। उसका मानना था कि अगर किसी दूसरे देश में क्रांति हो रही हो, तो फिर उस क्रांति को सामूहिक रूप से दबा दिया जाना चाहिये।
4. मेटरनिख पद्धति का बल यूरोप में शक्ति संतुलन बनाये रखने पर रहा था। उसके विचार में यही युद्ध का एकमात्र विकल्प है।

■ वियना व्यवस्था को परिवर्तन की शक्ति के द्वारा चुनौतीः

- किन्तु दूसरी तरफ परिवर्तन की शक्तियाँ भी सक्रिय हो गयीं और यह वियना व्यवस्था को चुनौती देने लगी। परिवर्तन की शक्तियाँ वैचारिक और भौतिक दोनों थीं-

वैचारिक शक्तिः

- **उदारवाद**- 'उदारवाद' अर्थात् 'Liberalism' एक लैटिन शब्द 'Liber' (लीबर) से निकला है जिसका अर्थ होता है स्वतंत्रता अथवा आजादी। मोटे तौर पर पुरातन व्यवस्था के विरूद्ध मध्यवर्ग के द्वारा जो परिवर्तन की माँगें उठाई गयीं, उसे उदारवाद के रूप में जाना गया। उदारवाद मध्यवर्गीय आकांक्षा को व्यक्त कर रहा था इसका मुख्य बल राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिनिध्यात्मक सरकार, आर्थिक क्षेत्र में मुक्त अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर था।
- **राष्ट्रवाद**- 16वीं-17वीं सदी के यूरोप में सामंतवाद के विघटन के साथ राष्ट्रीय-राज्य की सीमा निर्धारित होने लगी थी। राजतंत्र के द्वारा स्थापित राष्ट्रीय-राज्य आंतरिक रूप से विभाजित था क्योंकि प्रजा को समान स्तर प्राप्त नहीं था। विभाजन का आधार कुलीनता, धर्म, क्षेत्र आदि था। आधुनिक राष्ट्रवाद के युग में ही ऐसा संभव हुआ कि राष्ट्र एवं समाज की दूरी समाप्त कर दी गई। जन्म, धर्म, क्षेत्र जैसे विभाजन को समाप्त कर प्रजा को एक ही दर्जा मिल गया। अब वह प्रजा की जगह नागरिक कहा जाने लगा। इसे निम्नलिखित डायग्राम के माध्यम से समझा जा सकता है-

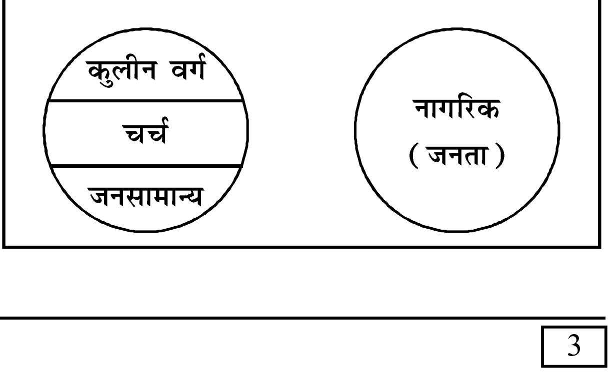

- उदारवाद की तरह राष्ट्रवाद भी मध्य वर्ग की आंकाक्षा (इच्छा) को व्यक्त कर रहा था तथा इटली एवं जर्मनी के विभाजित क्षेत्रों में यह एकीकरण की माँग कर रहा था।

भौतिक-आर्थिक शक्तिः

- **औद्योगिक क्रांति-** अगर आर्थिक ढाँचे में बदलाव आ जाये, तो फिर सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन को नहीं रोका जा सकता। 19वीं सदी में पश्चिमी यूरोप में एक महत्वपूर्ण आर्थिक घटना घटित हुई। वह घटना थी औद्योगिक क्रान्ति। इसने एक तरफ जहाँ मध्यवर्ग को अधिक शक्तिशाली बनाया, वहीं एक औद्योगिक श्रमिक वर्ग को जन्म दिया। इन दोनों वर्गों की आकांक्षाएँ यूरोपीय व्यवस्था से टकराने लगीं।
- अतः 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में यूरोप विद्रोह एवं क्रान्ति के दौर से गुजरता रहा, इन्हें निम्नलिखित रूप मे समझा जा सकता है-

■ 1820 के दशक का विद्रोहः

- यह फ्रांस से आरम्भ हुआ, जब कुछ क्रान्तिकारियों ने फ्रांस के शासक लुई 18वें के उत्तराधिकारी ड्यूक डी बेरी की हत्या कर दी। फिर यह विद्रोह कुछ इटालियन राज्यों में और बेल्जियम तथा स्पेन में फैल गया। इस क्रम में सबसे महत्वपूर्ण विद्रोह था- यूनान का विद्रोह।
- यूनान ईसाई बहुल क्षेत्र था, परन्तु वह ऑटोमन साम्राज्य के अधीन था जो एक मुस्लिम साम्राज्य था। इसलिए यूरोपीय शक्तियों ने वियना व्यवस्था को दरकिनार करते हुये यूनान की स्वतंत्रता का समर्थन कर दिया। अतः ब्रिटेन के समर्थन से 1829 में यूनान को स्वतंत्रता मिल गयी और 1832 में उसे यूरोपीय शक्तियों का भी अनुमोदन मिल गया। यह घटना दो कारणों से महत्वपूर्ण थी- प्रथम, इसके साथ वियना व्यवस्था में टूटन आरम्भ हो गयी थी, दूसरे, कन्सर्ट ऑफ यूरोप भी आन्तरिक रूप में विभाजित हो गया था।
- इस आन्दोलन के मध्य सबसे दिलचस्प घटना है यूरोप एवं अमेरिका के बीच नये सम्बन्धों की शुरूआत। एक तरफ जहाँ स्पेन में आन्दोलन आरम्भ हुआ था, वहीं दूसरी तरफ स्पेन के लैटिन अमेरिका में स्थित उपनिवेशों ने भी एक सैनिक जनरल साइमन बोलिवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। कहीं इस विद्रोह का प्रभाव यूरोप पर भी न पड़े, इस भय से घबराकर ऑस्ट्रिया एवं रूस ने लैटिन अमेरिकी उपनिवेशों के विद्रोह को दबाने के लिए एक यूरोपीय सेना भेजने की योजना बनायी। परन्तु ब्रिटेन ने इस निर्णय का विरोध किया और फिर उसने यूरोपीय शक्तियों के विरूद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका को भड़काया। अतः अमेरिकी राष्ट्रपति मुनरो ने 1823 में यूरोपीय शक्तियों को यह चेतावनी दे डाली कि लैटिन अमेरिका, संयुक्त राज्य अमेरिका का गलियारा है, अगर कोई बाहरी शक्ति उसमें हस्तक्षेप करती है तो वह संयुक्त राज्य अमेरिका के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप माना जायेगा। इसे विश्व इतिहास में **'मुनरो सिद्धांत'** के नाम से जाना जाता है।

■ 1830 की क्रान्तियाँः

- यह क्रान्ति भी फ्रांस से आरम्भ हुयी। 1824 में लुई 18वें की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी चार्ल्स दशम् (1824-30) बना। उसने एक बार फिर एक कठोर शासन व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया। अतः फ्रांस में विभिन्न राजनीतिक दल; यथा-राजतंत्रवादी, गणतन्त्रवादी और बोनापार्टवादी तीनों ने संगठित होकर क्रांति आरम्भ की। इस कारण चार्ल्स दशम् की सरकार गिर गयी। क्रान्ति के पश्चात् राजतंत्रवादियों के सहयोग से लुई फिलिप के अधीन एक दूसरे राजतंत्र की स्थापना हुई, परन्तु यह राजतंत्र, पुराने राजतंत्र से इस रूप में पृथक था कि यह जनता के द्वारा स्थापित किया गया था और लुई फिलिप ने भी स्वयं को जनता का शासक घोषित किया।
- यह क्रान्ति अन्य देशों में भी फैल गयी, बेल्जियम 1833 में हॉलैण्ड से स्वतंत्र हो गया। नॉर्वे को भी स्वीडन से अलग कर दिया गया। पश्चिमी यूरोप में स्पेन एवं पुर्तगाल में भी आंदोलन हुए तथा वहाँ उदारवादी सरकारें स्थापित हुईं। यद्यपि ब्रिटेन में स्पष्टतः कोई क्रांति नहीं हुई, लेकिन मध्य वर्ग के दबाव में ब्रिटेन ने 1832 का संसदीय सुधार कानून पारित किया। इसके तहत 6 लाख नए मतदाताओं को मताधिकार प्रदान किया गया।
- 1830 की क्रांति अपेक्षाकृत पश्चिमी यूरोप में सफल रही किंतु मध्य यूरोप एवं पूर्वी यूरोप में परिवर्तन को दबा दिया गया। इटली और जर्मनी में भी एकीकरण के पक्ष में आन्दोलन हुआ। इन क्रान्तियों का परिणाम था वियना

व्यवस्था के विघटन को प्रोत्साहन क्योंकि एक तरफ जहाँ फ्रांस में वैध राजवंश का पतन हो गया, वहीं दूसरी तरफ बेल्जियम, हॉलैण्ड से स्वतन्त्र हो गया।

- **1848 की क्रांतियाँ:**

- 1848 की क्रांतियाँ पूर्व क्रांतियों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक एवं उग्र रूप में प्रकट हुई थीं। इसके कई कारण थे। प्रथम, मेटरनिख व्यवस्था के विरूद्ध मध्यवर्ग का आक्रोश बढ़ रहा था। दूसरे, औद्योगिक क्रांति ने जहाँ एक तरफ मध्यवर्ग को पहले की तुलना में अधिक शक्तिशाली बनाया, वहीं दूसरी तरफ उसने एक औद्योगिक श्रमिक वर्ग को जन्म दिया।
- इस क्रांति के मध्य नेतृत्व मध्य वर्ग के हाथों में था, जो संसद और बौद्धिक जगत में सक्रिय था, जबकि सड़कों पर घेरेबन्दी का काम निम्न वर्ग के लोग कर रहे थे, विशेषकर कारीगर एवं दस्तकार (शिल्पकार)।
- यह क्रान्ति भी फ्रांस से ही आरम्भ हुई। इसमें भी राजतंत्रवादी, गणतंत्रवादी और बोनापार्टवादी तीनों ने बढ़-चढ़कर भूमिका निभायी। इस कारण 1848 में लुई फिलिप की सरकार गिर गयी। फिर 1848 में जब चुनाव कराये गये, तो फिर उसमें गणतन्त्रवादियों की जीत हुई और फिर फ्रांस को एक गणतन्त्र घोषित कर दिया गया (यह फ्रांस का दूसरा गणतंत्र था, अब तक फ्रांस में 5 गणतंत्र स्थापित हुए हैं)। फिर जब 1848 में नये गणतन्त्र के चुनाव कराये गये उसमें बोनापार्टवादियों की जीत हुई और नेपोलियन का भतीजा लुई नेपोलियन-III प्रेसीडेण्ट के पद पर निर्वाचित हुआ। किन्तु 4 वर्षों के अन्दर ही फ्रांस के दूसरे गणतंत्र को समाप्त कर उसने स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया।
- उधर पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों में भी बदलाव महसूस किया गया। स्पेन एवं पुर्तगाल में संवैधानिक माँगें उठीं अर्थात् नये संविधानों को स्थापित किया गया। मध्य यूरोप में ऑस्ट्रिया में भी आन्दोलन तीव्र हो गया। अत: मेटरनिख देश छोड़कर भाग गया और ब्रिटेन में शरण ले ली, परन्तु आगे ऑस्ट्रिया के सम्राट ने रूस की सहायता से इस क्रान्ति को दबा दिया। ब्रिटेन में इस क्रान्ति ने 1848 के चार्टिस्ट आंदोलन का रूप ले लिया।
- उधर इटली और जर्मनी में राष्ट्रीय एकीकरण के पक्ष में आन्दोलन आरम्भ हो गया, परन्तु दोनों ही क्षेत्रों में राष्ट्रवादियों की हार हुई और एकीकरण का प्रयास विफल हो गया। कुल मिलाकर पश्चिमी यूरोप में कुछ हद तक परिवर्तन सफल हुए, परन्तु मध्य यूरोप और पूर्वी यूरोप में यह प्रयास विफल हो गया।

- **1848 की क्रांति से इटली एवं जर्मनी के राष्ट्रवादियों को सबक-**

- इससे पूर्व इटली और जर्मनी के राष्ट्रवादी वैध तरीके से तथा जनता के सहयोग से एकीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे, परन्तु इस विफलता से सबक लेकर वे नेतृत्व के लिए राजतंत्र की ओर मुड़ गए। फिर इटली के राष्ट्रवादी नेतृत्व के लिए पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के शासक की ओर देखने लगे, तो जर्मन राष्ट्रवादी प्रशा के राजतंत्र की ओर। अत: पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के शासक की ओर से उसके प्रधानमंत्री काउन्ट काबूर और प्रशा के शासक की ओर से उसके चांसलर बिस्मार्क ने निर्णायक भूमिका निभायी।

- **क्रीमिया का युद्ध (1854-56 ई.)**

- लुई नेपोलियन-III के अधीन फ्रांसीसी साम्राज्य पुनर्जीवित हुआ था और वह यूरोप में बड़ी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध था। वहीं दूसरी तरफ रूस की विस्तारवादी नीति एवं बाल्कन क्षेत्र में बढ़ती हुयी महत्वाकांक्षा को देखकर ब्रिटेन चिन्तित हो गया था और वह फ्रांस के निकट आ गया था। फिर ब्रिटेन और फ्रांस ने रूस के विरूद्ध ऑटोमन साम्राज्य का समर्थन कर दिया। अत: क्रीमिया का युद्ध घटित हुआ।
- क्रीमिया का युद्ध यूरोप में एक युगान्तकारी घटना बन गयी। इस युद्ध में एक अनुदारवादी शक्ति रूस पराजित होकर यूरोप की सक्रिय राजनीति से हट गया। सबसे बढ़कर दो अनुदारवादी शक्तियों-रूस और ऑस्ट्रिया के बीच मतभेद उभरकर आया। इसका सीधा परिणाम था यूरोप में अनुदारवादी शक्तियों का कमजोर हो जाना। चूंकि अब रूस अलग हट गया था, इसलिए यूरोपीय व्यवस्था की सुरक्षा का दायित्व अकेला ऑस्ट्रिया के सिर आ गया, जो ऑस्ट्रिया नहीं कर सकता था। इटली एवं जर्मनी के एकीकरण को इस सदंर्भ में भी समझने की जरूरत है।
- आगे उपर्युक्त दोनों घटनाओं अर्थात् इटली एवं जर्मनी के राष्ट्रवादियों की परिवर्तित नीति एवं क्रीमिया के युद्ध में एक अनुदारवादी शक्ति रूस की हार ने इटली एवं जर्मनी के एकीकरण को प्रोत्साहन दिया।

■ **19वीं सदी के यूरोप पर आधुनिक राष्ट्रवाद का प्रभाव:**

राष्ट्रवाद का यूरोप पर प्रभाव		
एकीकरण आंदोलन ↓		**विघटनकारी आंदोलन** ↓
पश्चिमी यूरोप के देश ↓	इटली और जर्मनी के विभाजित क्षेत्र ↓	ऑटोमन, हैब्सबर्ग और रूसी साम्राज्य ↓
इन देशों में कम सांस्कृतिक विविधता थी तथा प्रबोधन और फ्रांस की क्रांति के माध्यम से इन क्षेत्रों का तेजी से आधुनिकीकरण हुआ। अत: ये शीघ्रता से आधुनिक राष्ट्र में ढल गये, यथा-फ्रांस, ब्रिटेन, स्पेन, हॉलैंड, बेल्जियम, पुर्तगाल आदि।	इन क्षेत्रों में राष्ट्रवाद ने एकीकरण के आंदोलन को जन्म दिया तथा यह आधुनिक राष्ट्र के रूप में ढल गए।	ये साम्राज्य अपने स्वरूप में बहु भाषा-भाषी और बहु नस्लीय थे। सबसे बढ़कर ये मध्ययुगीन ही बने रहे थे। इन्होंने अपना आधुनिकीकरण नहीं किया था। इसलिए उन क्षेत्रों में राष्ट्रवाद ने विघटनकारी आंदोलन को प्रोत्साहन दिया और पृथक्-पृथक् नस्लीय समूह के लोग अपने को पृथक् राष्ट्र का समझने लगे।

■ **इटली का एकीकरण-**

- **इटली के एकीकरण के मार्ग में बाधाएँ-** इटालियन क्षेत्र 7 राज्यों में विभाजित था और जाहिर है कि इन राज्यों में स्वतंत्र शासक थे जो एकीकरण को स्वीकार नहीं करते। फिर, उत्तरी और दक्षिणी इटली आर्थिक रूप में विभाजित था। उत्तरी इटली अपेक्षाकृत अधिक विकसित था, तो दक्षिणी इटली कम विकसित। वहीं एक सोची-समझी नीति के तहत मध्यवर्ती इटालियन क्षेत्र को पोप के अधीन कर दिया गया था, ताकि इटली के दोनों भागों को परस्पर जोड़ा न जा सके। दूसरी तरफ, एकीकरण के स्वरूप के विषय में भी मतभेद था, यथा- एकीकरण पोप के अधीन हो, या पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के अधीन हो या फिर गणतंत्र के अधीन हो। इसके अतिरिक्त, इटली के एकीकरण के मार्ग में एक समस्या यह थी कि इटली में किया जाने वाला कोई भी परिवर्तन ऑस्ट्रिया के अनुमोदन के बिना संभव नहीं था।
- **इटली के एकीकरण में विभिन्न व्यक्तित्वों की भूमिका तथा एकीकरण की प्रगति-**
- इटली के एकीकरण का स्वप्न मेजनी ने बुना था। वह एक समर्पित गणतंत्रवादी था। वह गणतन्त्र के अधीन इटली का एकीकरण लाना चाहता था। परन्तु पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के प्रधानमंत्री काउन्ट काबूर ने सैनिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति का सहारा लेकर एकीकरण के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। उसका प्रयास था कि एकीकरण पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के राजतंत्र के अन्तर्गत हो और गणतन्त्रवादियों को नियन्त्रण में रखा जाये। इस क्रम में सर्वप्रथम उसने पीडमॉण्ट-सार्डीनिया को आर्थिक एवं सैन्य दृष्टि से सक्षम बनाया।
- घरेलू स्तर पर सशक्त बनाने के बाद उसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को इटालियन एकीकरण के पक्ष में मोड़ना प्रारंभ किया। उसने क्रीमिया के युद्ध (1854-56) में ब्रिटेन और फ्राँस के पक्ष में अपनी सेना भेजकर उनकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। फिर उसने फ्रांस के शासक लुई नेपोलियन तृतीय के साथ पोलम्बियर्स की संधि (1858) की, जिसके अनुसार उसने फ्रांस को नीस और सेवॉय देने के एवज में ऑस्ट्रिया के विरूद्ध फ्रांस की सहायता अर्जित कर ली। फिर फ्रांस की सहायता से वह ऑस्ट्रिया से 1859 में लोम्बार्डी का भू-भाग प्राप्त करने में सफल रहा। लोम्बार्डी के विलय के बाद काबूर जनमत संग्रह के माध्यम से परमा, मोडेना और टस्कनी का विलय पीडमॉण्ट-सार्डीनिया के साथ करने में कामयाब रहा।
- उत्तरी इटालियन राज्यों के विलय के बाद काबूर का लक्ष्य पूरा हो गया था। अब काबूर दक्षिण में नेपल्स और सिसली की ओर नहीं बढ़ना चाहता था। किन्तु दूसरी तरफ

गैरीबाल्डी, जो मेजनी का ही शिष्य रहा था, इस अधूरे एकीकरण से संतुष्ट नहीं था। इसलिए 1859 में उसने दक्षिणी इटली अर्थात् नेपल्स और सिसली दोनों राज्यों का जन आन्दोलन के माध्यम से इटली में विलय करा दिया। इसी क्रम में पोप के क्षेत्र पर भी कब्जा कर लिया गया। अब केवल दो क्षेत्र बच गये थे- वेनेशिया और रोम, जिनका विलय जर्मनी के एकीकरण के साथ हुआ। इस प्रकार संयुक्त इटली का निर्माण हुआ।

■ **जर्मनी का एकीकरण-**

- **जर्मनी के एकीकरण में बाधाएँ-** वियना कांग्रेस ने जर्मनी को 39 राज्यों में विभाजित कर दिया था। अत: इन क्षेत्रों के स्वतन्त्र शासकों के रहते हुए व्यावहारिक रूप में एकीकरण सम्भव नहीं था। दूसरी तरफ, जर्मनी में ऑस्ट्रिया तथा प्रशा, दो शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्द्धा चल रही थी। इनकी प्रतिस्पर्द्धा को देखते हुए कोई बड़ा परिवर्तन सम्भव नहीं था। सबसे बढ़कर, जर्मनी मध्य यूरोपीय क्षेत्र में स्थित था तथा इसके एकीकरण का अर्थ था यूरोप में शक्ति संतुलन का बिगड़ जाना। अत: वेस्टफेलिया की संधि के काल से ही यूरोपीय शक्तियों का यह प्रयास था कि इस क्षेत्र का एकीकरण नहीं हो, विशेषकर फ्रांस इस एकीकरण का विरोधी रहा था।
- **जर्मन क्षेत्रों की एकीकरण की दिशा में प्रगति-**
- 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में जर्मन राष्ट्रवाद की प्रगति होने लगी थी, जिसमें जर्मन दार्शनिकों के क्रांतिकारी विचारों ने अहम भूमिका निभायी थी। फिर औद्योगिक क्रांति ने जर्मनी के एकीकरण के लिए भौतिक आधार तैयार किया। वस्तुत: वियना कांग्रेस के द्वारा प्रशा को लोहा एवं कोयला उत्पादक राईनलैंड का भू-भाग दिया गया था, जिसके कारण औद्योगिक क्रान्ति पहले प्रशा में आरम्भ हुई। इसका एक स्वाभाविक परिणाम था रेलवे का विकास, जिसने जर्मन क्षेत्र के बीच भौगोलिक दूरी व्यावहारिक रूप में कम कर दी और राजनीतिक एकता को बल प्रदान किया। फिर जर्मन क्षेत्र की आर्थिक सफलता ने 1834 में एक चुंगी संघ अथवा जॉल्वेरिन के गठन का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके परिणामस्वरूप जर्मन राज्यों का प्रशा के साथ आर्थिक एकीकरण हो गया।
- आर्थिक एकीकरण, राजनीतिक एकीकरण की गारण्टी नहीं होता। यद्यपि यह सही है कि जर्मन राज्य जॉल्वेरिन के माध्यम से प्रशा के साथ एकीकृत हो गये थे, जबकि ऑस्ट्रिया उससे बाहर रह गया था। अत: जब प्रशा ने राजनीतिक एकीकरण की दिशा में कदम बढ़ाया, तो ऑस्ट्रिया के विरोध के कारण यह विफल हो गया। यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि ऑस्ट्रिया के विरोध के कारण राजनीतिक एकीकरण की दिशा में प्रगति अत्यधिक कठिन थी। वस्तुत: एकीकरण की दिशा में एक गाँठ पड़ चुकी थी जिसे खोला नहीं जा सकता था, बल्कि तलवार से ही काटा जा सकता था। यहीं बिस्मार्क की भूमिका प्रबल हो जाती है।
- प्रशा के चांसलर बिस्मार्क ने कूटनीति एवं सैनिक उपायों का सहारा लेकर जर्मनी के एकीकरण के लक्ष्य को पूरा किया। 1862 में वह जर्मनी के चांसलर के पद पर नियुक्त हुआ था। आगे उसने प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण का लक्ष्य रखा। इस क्रम में बिस्मार्क के द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए-

1. बिस्मार्क ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को अपने पक्ष में कर लिया। इस क्रम में उसने लुई नेपोलियन-III को राईन क्षेत्र में थोड़ा भू-भाग देने का अस्पष्ट आश्वासन देकर उसकी निष्पक्षता प्राप्त कर ली। फिर उसने इटली के साथ भी ऑस्ट्रिया के विरूद्ध एक समझौता कर लिया। वह एक अवसरवादी कूटनीतिज्ञ था। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वह हमेशा विकल्पों को खुला रखता था और अंतिम क्षण में भी अपना निर्णय बदल लेता था। पूरी तैयारी करने के पश्चात् उसने ऑस्ट्रिया को युद्ध के लिए उकसाया। अत: सेडोवा का युद्ध घटित हुआ।
2. **सेडोवा का युद्ध (1866)-** इस युद्ध में इटली भी प्रशा के साथ रहा था। फिर इस युद्ध में फ्रांस की निष्पक्षता जीतकर प्रशा ने ऑस्ट्रिया को पराजित किया और इसके साथ ही मार्च, 1866 में प्राग की संधि के द्वारा उत्तरी जर्मन राज्यों का विलय प्रशा के साथ हो गया।
3. **सेडान का युद्ध (1870)-** बिस्मार्क इस बात को जानता था कि फ्रांस को रास्ते से हटाये बिना दक्षिणी जर्मन राज्यों का विलय सम्भव नहीं था। अत: उसने फ्रांस के साथ युद्ध की परिस्थितियाँ निर्मित कीं और सेडान के युद्ध में फ्रांस को बुरी तरह पराजित कर दिया। इसके साथ ही दक्षिणी जर्मन राज्यों का विलय प्रशा के साथ हो गया। इस प्रकार 1871 में प्रशा के नेतृत्व में एकीकृत जर्मन राष्ट्र का

उदय हुआ। परन्तु जर्मनी का एकीकरण फ्रांस को अपमानित करके पूरा किया गया था। इतना ही नहीं, फ्रैंकफर्ट की संधि (1870) के आधार पर फ्रांस से एल्सेस और लॉरेन का क्षेत्र भी छीन लिया गया। अतः आगे फ्रांस और जर्मनी के बीच स्थायी शत्रुता का बीज पड़ गया।

- **राष्ट्रवाद का विघटनकारी प्रभाव-**

- जैसा कि हम जानते हैं कि राष्ट्रवाद ने एक साथ एकीकरण एवं विघटन दोनों प्रकार के आन्दोलनों को जन्म दिया। मध्य यूरोप एवं पूर्वी यूरोप के पुराने साम्राज्यों; यथा- ऑटोमन साम्राज्य, हैब्सबर्ग साम्राज्य एवं रूसी साम्राज्य पर इसने विघटनकारी प्रभाव पैदा किया। वस्तुतः ये तीनों साम्राज्य बहुभाषा-भाषी एवं बहुनस्लीय थे अर्थात् इनका स्वरूप विविधतामूलक था। दूसरी तरफ इन सरकारों के द्वारा अपने-अपने क्षेत्र का आधुनिकीकरण नहीं किया गया था। वे अपने स्वरूप में मध्ययुगीन ही बने रहे। इसलिए पश्चिमी यूरोप से उभरने वाले आधुनिक राष्ट्रवाद की चुनौती का सामना नहीं कर सके तथा आधुनिक राष्ट्रवाद के प्रभाव में चेक, मग्यार, स्लाव आदि नस्लीय समूह के लोगों ने अपने को पृथक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। इसके अलावा, इनकी सरकारों के द्वारा अपनी एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए राजतंत्र, सेना और नौकरशाही जैसे माध्यमों पर विशेष बल दिया गया, परन्तु ये प्रयत्न कारगर नहीं रहे। इसलिए इन साम्राज्यों पर विघटन के लिए दबाव बढ़ रहा था। परंतु आरम्भ में विघटन का सामना ऑटोमन साम्राज्य को करना पड़ा, हैब्सबर्ग साम्राज्य और रूसी साम्राज्य ने अपने विघटन को आरम्भ में रोक लिया। परन्तु आगे प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् यूरोपीय शक्तियों ने हैब्सबर्ग साम्राज्य को विभाजित कर दिया, जबकि रूसी साम्राज्य 20वीं सदी के अंतिम दशक तक चलता रहा। 1991 में आकर ही रूसी साम्राज्य का विघटन हुआ, तब वह 'सोवियत रूस' के नाम से जाना जाता था।

- **बाल्कन प्रश्न क्या था तथा यह हमेशा अखिल यूरोपीय प्रश्न क्यों बना रहा?**

- ऑटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत पूर्वी यूरोप का क्षेत्र, जिसमें ईसाई जनसंख्या निवास करती थी, बाल्कन क्षेत्र कहा जाता था। इस क्षेत्र में विघटनकारी या अलगाववाद को बल मिला। इस कारण तनाव उत्पन्न हुआ, इसे बाल्कन समस्या का नाम दिया गया। इस समस्या के निम्नलिखित पहलू थे-

1. ऑटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत पूर्वी यूरोप में निवास करने वाले अल्पसंख्यक समूह राष्ट्रवाद के प्रभाव में पृथक् राष्ट्र की माँग कर रहे थे।
2. ऑटोमन साम्राज्य के परिप्रेक्ष्य में एक कमजोर पक्ष यह था कि यह एक मुस्लिम साम्राज्य था, जबकि पूर्वी यूरोप में इसकी एक बड़ी जनसंख्या ईसाई थी। अतः नस्लीय विभाजन के साथ-साथ वहाँ एक प्रकार का धार्मिक विभाजन भी विद्यमान था।
3. सामान्यतः कन्सर्ट ऑफ यूरोप की नीति अलगाववाद को दबाने की ओर रही थी, परन्तु ऑटोमन साम्राज्य के सन्दर्भ में यूरोपीय शक्तियाँ धार्मिक समानता के कारण अल्पसंख्यक समूह के साथ सहानुभूति दिखाने लगतीं।
4. 19वीं सदी के आरम्भ तक ऑटोमन साम्राज्य का पतन हो गया था और वह यूरोप का मरीज बन गया था। अतः विभिन्न यूरोपीय शक्तियाँ उस पर दबाव डालकर विविध प्रकार की रियायतें प्राप्त करना चाहती थीं।
5. परन्तु दूसरी तरफ स्वयं यूरोपीय शक्तियों का लक्ष्य भी परस्पर टकरा रहा था, जिस कारण उनके बीच तनाव उत्पन्न होता था। उदाहरण के लिए, रूस का ऑटोमन साम्राज्य के अन्तर्गत एक दूरगामी एवं एक अल्पकालिक हित था। दूरगामी हित था- ऑटोमन साम्राज्य को विभाजित कर उसके एक बड़े भाग पर कब्जा कर लेना; वहीं अल्पकालिक हित था- कालासागर के मुहाने पर डार्डेनल्स एवं बास्फोरस दो जलडमरूमध्यों पर नियन्त्रण स्थापित करना, ताकि रूस का युद्धपोत सीधे तौर पर काला सागर से भूमध्यसागर में आ सके।

परन्तु रूसी गतिविधियों से ब्रिटेन चिन्तित था। एक तरफ ब्रिटेन को यह डर था कि अगर ऑटोमन साम्राज्य

विभाजित हो गया, तो यूरोप में शक्ति संतुलन बिगड़ जाएगा। उसी प्रकार, अगर रूस भूमध्यसागर में आ गया, तो ब्रिटेन का भारत जाने का मार्ग रोका जा सकता है। दूसरी तरफ, रूस के प्रोत्साहन पर सर्बिया में एक सर्व-स्लाववादी आन्दोलन (Pan-Slav Movement) पर बल दिया जा रहा था। इसके तहत बाल्कन क्षेत्र में स्लाव जनसंख्या को मिलाकर एक वृहद् राष्ट्र का निर्माण किया जाना था। यह स्लाव राष्ट्र रूस के इशारे पर काम करता। परन्तु इस स्थिति में ऑटोमन साम्राज्य के साथ-साथ हैब्सबर्ग साम्राज्य को भी विघटन का खतरा था। इस कारण ऑस्ट्रिया और रूस के बीच बहुत अधिक तनाव था।

- बाल्कन समस्या एक अखिल यूरोपीय समस्या इसलिए बन गयी क्योंकि यूरोपीय शक्तियों के हित परस्पर इस प्रकार टकरा रहे थे कि अगर एक शक्ति की गतिविधि बाल्कन क्षेत्र में होती, तो अन्य यूरोपीय शक्तियाँ भी चिन्तित हो जातीं। इस कारण बालकन समस्या ने दो विश्व युद्धों को जन्म दिया।

■ **ऑटोमन साम्राज्य का विघटन तथा स्वतंत्र राज्यों की स्थापना-**

- सम्पूर्ण 19वीं सदी से लेकर लगभग प्रथम विश्वयुद्ध तक ऑटोमन साम्राज्य निरन्तर विघटित होता रहा तथा स्वतंत्र राज्यों की स्थापना होती रही। उदाहरण के लिए-

1. 1832 तक **यूनान** की स्वतन्त्रता।
2. रूम जनसंख्या के अन्तर्गत 1859 में माल्डेविया और वेलेशिया को मिलाकर स्वतन्त्र **रूमानिया** का निर्माण।
3. 1878 में बर्लिन कांग्रेस के द्वारा **सर्बिया और मॉण्टेनिग्रो** की स्वतंत्रता की स्वीकृति।
4. 1885 में बल्गान जनसंख्या की पहल पर स्वतंत्र **बुल्गारिया** का निर्माण।
5. युवा तुर्क आन्दोलन की प्रतिक्रिया में 1912-13 में बाल्कन युद्ध घटित और फिर इस युद्ध के पश्चात् 1913 के लंदन सम्मेलन में स्वतंत्र **अल्बानिया** का निर्माण।

- निरन्तर विघटन से तंग आकर ऑटोमन साम्राज्य प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी के खेमे में चला गया तथा फिर वह युद्ध हार गया। फिर मित्र राष्ट्रों ने ऑटोमन साम्राज्य का खात्मा करने की योजना बनायी। तभी एक सैनिक जनरल मुस्तफा कमाल पाशा का उद्भव हुआ। मुस्तफा कमाल ने मित्र राष्ट्रों पर सैन्य दबाव बनाकर ऑटोमन साम्राज्य के विघटन को रोक दिया और फिर उसने ऑटोमन साम्राज्य के बचे हुए भाग का आधुनिकीकरण करके उसे आधुनिक तुर्की राष्ट्र घोषित कर दिया।

प्रश्न- 19वीं सदी में राष्ट्रवाद ने यूरोप में एकीकरण एवं विभाजन दोनों प्रकार के आन्दोलनों को प्रोत्साहन दिया। स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द)

प्रश्न-विश्लेषण- *यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। इसके Key words हैं 'एकीकरण', 'विभाजन', 'यूरोप', 'स्पष्ट कीजिए'। इस कथन को केवल सिद्ध करना है।*

राष्ट्रवाद का यूरोप पर प्रभाव

पश्चिमी यूरोप	इटली और जर्मनी	ऑटोमन, हैब्सबर्ग और रूसी साम्राज्य
↓	↓	↓
आंतरिक रूप से संगठित किया	विभाजित क्षेत्रों को एकीकृत किया	भाषायी एवं नस्लीय आधार पर विघटनकारी तत्वों को प्रोत्साहन

उत्तर- 19वीं सदी के यूरोप में राष्ट्रवाद एक क्रांतिकारी विचारधारा सिद्ध हुआ। शायद ही किसी दूसरी विचारधारा ने यूरोप पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ा, जितना राष्ट्रवाद ने। इसने एक ही साथ एकीकरण एवं विभाजन दोनों प्रकार के आन्दोलनों को बल प्रदान किया।

एक तरफ पश्चिमी यूरोप के देश, अर्थात् फ्रांस, ब्रिटेन, स्पेन आदि थे, जो पहले से ही राष्ट्रीय-राज्य के रूप में ढल चुके थे। अतः आधुनिक राष्ट्रवाद के प्रभाव में 19वीं सदी में वे आन्तरिक रूप से अधिक संगठित हुए।

वहीं इटली एवं जर्मनी जैसे विभाजित क्षेत्रों पर आधुनिक राष्ट्रवादी विचारधारा ने क्रांतिकारी प्रभाव छोड़ा तथा वियना कॉन्ग्रेस एवं मेटरनिख व्यवस्था के तमाम प्रयासों के बावजूद 1870 तक वे आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित हो गए।

किन्तु दूसरी तरफ पुराने साम्राज्यों पर, जो अपने स्वरूप में बहु भाषा-भाषी एवं बहुनस्लीय थे, राष्ट्रवाद का विघटनकारी प्रभाव देखा गया। यद्यपि 19वीं सदी में रूसी साम्राज्य एवं हैब्सबर्ग साम्राज्य अपने को बचाने में कामयाब रहे, परन्तु ऑटोमन साम्राज्य विघटन का शिकार हो गया। इस प्रकार, राष्ट्रवाद का यूरोप पर विभेदकारी प्रभाव देखा गया।

KHAN SIR

प्रश्न:- फ्रांस की क्रांति ने, जितना उससे अपेक्षा की गई थी, उससे बहुत कम पाया। क्या आप सहमत हैं? (150 शब्द)

*(**प्रश्न विश्लेषण:** इस प्रश्न में आप 'Key words' पर ध्यान दें। इसमें एक महत्वपूर्ण Key word 'क्या आप सहमत हैं?' इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि आपको असहमति के बिंदु दर्शाने हैं।)*

उत्तर:- फ्रांस की क्रांति 'स्वतंत्रता', 'समानता' तथा 'बंधुत्व' जैसे नारे के साथ प्रकट हुई, किन्तु क्रियान्वयन के मध्य इन लक्ष्यों की अवहेलना हुई थी। 1791 के संविधान में सीमित मताधिकार की पद्धति लागू की गई थी। जैकोबियन शासन भी व्यवहार में एक व्यक्ति का शासन बनकर रह गया। अंत में, नेपोलियन ने फिर एक बार राजतंत्र को पुनर्जीवित कर दिया। अत: ऐसा प्रतीत होता है कि क्रांति अपने आदर्शों से दूर हट गई थी।

इस आधार पर ऐसा माना जा सकता है कि क्रांति ने अपने घोषित लक्ष्य से कम पाया, परंतु फिर भी इसके महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

1. वियना कांग्रेस, फ्रांस तथा यूरोप को क्रांति-पूर्व स्थिति में नहीं लौटा सकी।
2. 1830 तथा 1848 की क्रांतियों के माध्यम से फ्रांस एवं यूरोप में बदलाव होते रहे।
3. इटली एवं जर्मनी आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित हो गए।

अत: अगर देखा जाए तो 19वीं सदी का यूरोप फ्रांस की क्रांति की विरासत के साथ संघर्ष करता रहा था। इसलिए ऐसा नहीं कहा जा सकता कि फ्रांस की क्रांति ने बहुत कम पाया।

प्रश्न: 19वीं सदी का यूरोप फ्रांस की क्रांति की विरासत से ही संघर्ष करता रहा। परीक्षण कीजिए। (250 शब्द)

उत्तर: एक बहुप्रचलित कहावत है कि जीवित सीजर से मृतक सीजर अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। यही बात फ्रांस की क्रांति पर भी लागू होती है। वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन बोनापोर्ट का तो सफाया हो गया, परंतु नेपोलियन एवं फ्रांस की क्रांति की विरासत संपूर्ण 19वीं सदी के यूरोप में उथल-पुथल लाती रही। वियना कांग्रेस तथा मेटरनिख ने परिवर्तन की धारा को विपरीत दिशा में मोड़ना चाहा था परन्तु वह विफल हो गई तथा यूरोप निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरता रहा। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

1. **1830 तथा 1848 की क्रांतियाँ**- वियना कांग्रेस के लिए बड़ा खतरा 1830 एवं 1848 की यूरोपीय क्रांतियाँ थीं। ये फ्रांस की क्रांति के विचारों से प्रेरित थीं। उदारवाद एवं राष्ट्रवाद जैसी विचारधारा संपूर्ण यूरोप को आंदोलित करती रही। 1830 एवं 1848 की क्रांतियों के मध्य ऑस्ट्रिया, ब्रिटेन, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन जैसे एकीकृत देशों में उदारवादी माँगें उठ रही थीं। वहीं इटली एवं जर्मनी जैसे विभाजित देशों में राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में आंदोलन चल रहे थे।
2. **यूरोप के महत्वाकांक्षी राजतंत्रों के द्वारा राष्ट्रवाद की शक्ति से लाभ उठाना**- आगे इटली में पीडमॉण्ट-सार्डीनिया तथा जर्मनी में प्रशा के राजतंत्र ने राष्ट्रवाद का उपयोग अपने पक्ष में किया। इटली में काबूर एवं जर्मनी में बिस्मार्क के उद्भव को इस संदर्भ में देखने की जरूरत है। इनके द्वारा कूटनीतिक एवं सैन्य तकनीकी का उपयोग कर क्रमश: इटली एवं जर्मनी का एकीकरण किया गया। इन विभाजित क्षेत्रों के एकीकरण का अर्थ था वियना व्यवस्था का ध्वंश।
3. **अल्पसंख्यक समूहों में राष्ट्रवादी चेतना का उद्भव एवं पुराने साम्राज्यों का विघटन**- फ्रांस की क्रांति के विचारों ने केवल एकीकरण को ही नहीं, बल्कि विघटन को भी प्रोत्साहन दिया। फ्रांस की क्रांति का भूत ऑटोमन साम्राज्य, हैब्सबर्ग साम्राज्य तथा रूसी साम्राज्य को डराने लगा था। राष्ट्रवाद के प्रभाव में अलग-अलग नस्ल के समूह पृथक-पृथक राष्ट्र की माँग कर रहे थे। इसका सबसे भयानक प्रभाव तात्कालिक रूप में ऑटोमन साम्राज्य पर पड़ा, जहाँ अल्पसंख्यक समस्या ने बाल्कन समस्या का रूप ले लिया। अंतत: यह प्रथम विश्व युद्ध का कारण बनी।

इस प्रकार संपूर्ण 19वीं सदी तक यूरोप में मौन क्रांति चलती रही।

Food for Thought

- वियना कांग्रेस ने यूरोपीय व्यवस्था की स्थापना के लिए कौन-से कदम उठाए?
- वियना व्यवस्था को किन कारकों ने ध्वस्त कर दिया?
- राष्ट्रवाद का 19वीं सदी के यूरोप पर क्या प्रभाव पड़ा?
- 19वीं सदी के यूरोप में परिवर्तनों का विरोध कौन कर रहे थे और क्यों?
- ऑटोमन साम्राज्य के भीतर राष्ट्रवाद ने किस प्रकार संकट की स्थिति पैदा की?

■■■